INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.428 (SJIF 2026)

भारत के राष्ट्रीय जागरण में ''भारत भारती'' का स्थान

(The Role of Bharat-Bharati in India's National Awakening)

डॉ. शर्मिलाबहन सुमंतराय पटेल

असोसिएट प्रोफेसर,

हिंदी विभागाध्यक्ष एवं पी. जी. इन्चार्ज,

श्रीरंग नवचेतन महिला आर्ट्स कॉलेज,

वालिया (गुजरात, भारत)

E-mail: spatel28473@gmail.com

DOI No. 03.2021-11278686 DOI Link :: https://doi-ds.org/doilink/07.2026-31789215/IRJHIS2607018

सारांश :

राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त की काव्यकृति ''भारत भारती'' आधुनिक हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय चेतना संपन्न रचना है। यह कृति भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के पूर्ववर्ती काल में प्रकाशित हुई और उसने भारतीय समाज में राष्ट्रीय जागरण की भावना को सुदृढ करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। ''भारत भारती'' में कवि ने भारत के गौरवशाली अतीत, पराधीन वर्तमान तथा उज्जवल भविष्य का सशक्त चित्रण किया है। इस कृति के माध्यम से भारतीयों को अपनी सांस्कृतिक विरासत, राष्ट्रीय अस्मिता और उत्तरदायित्व के प्रति जागरूक होने की प्रेरणा प्राप्त हुई।

कवि ने राष्ट्रीय एकता, स्वदेश प्रेम, सामाजिक सुधार, नारी उत्थान, शिक्षा–प्रसार तथा आत्मनिर्भरता जैसे विषयों को प्रमुखता प्रदान करते हुए जनमानस में नवचेतना का संचार किया। ''भारत भारती'' केवल साहित्यिक कृति नही, बल्कि पुनर्जागरण का घोष पत्र भी है, जिसमें स्वतंत्रता आंदोलन के लिए वैचारिक आधार तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रस्तुत शोध पत्र में ''भारत भारती'' के राष्ट्रीय जागरण में योगदान तथा उसके सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक महत्व का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि यह कृति भारतीय राष्ट्रवाद और जनजागरण की एक सशक्त अभिव्यक्ति है, जिसका प्रभाव आज भी प्रासंगिक बना हुआ है।

मुख्य शब्द : भारत–भारती, राष्ट्रीय जागरण, राष्ट्रीय चेतना, राष्ट्रवाद, भारतीय संस्कृति, स्वाधीनता आंदोलन, सांस्कृतिक पुनर्जागरण, राष्ट्रीय एकता, भारतीय अस्मिता।

प्रस्तावना :

आधुनिक हिंदी साहित्य में राष्ट्रवादी चेतना के विकास में मैथलीशरण गुप्त का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। हिंदी कविता को राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत करने वाले कवियों में उनका स्थान अग्राणी है। उनकी प्रसिद्ध काव्यकृति 'भारत भारती' भारतीय राष्ट्रीय जागरण की प्रतिनिधि रचना है, जिसनें देशवासियों के मन में राष्ट्रप्रेम, आत्मगौरव और स्वतंत्रता की भावना जागृत करने में

उल्लेखनीय भूमिका निभाई। वर्ष 1912 में प्रकाशित यह कृति उस समय सामने आई, जब भारत अंग्रेजी शासन के अधीन था और स्वतंत्रता आंदोलन धीरे धीरे व्यापक जनआंदोलन का स्वरूप ग्राहण कर रहा था।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षो में सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जागरण की प्रक्रिया तीव्र हो रही थी। भारतीय समाज एक ओर विदेशी शासन के दमन और शोषण से पीडित था, तो दूसरी ओर सामाजिक कुरीतियों, रूढियों तथा अशिक्षा जैसी समस्याओं से भी जूझ रहा था। ऐसे समय में साहित्य ने जनचेतना के निर्माण का महत्वपूर्ण कार्य किया। 'भारत भारती' इसी राष्ट्रीय नवजागरण की सशक्त अभिव्यक्ति के रूप में सामने आई।

इस कृति में कवि ने भारत के अतीत की गौरवगाथा का वर्णन करते हुए वर्तमान की समस्याओं का विश्लेषण किया है तथा भविष्य के लिए आशा और संकल्प का संदेश दिया है। ''भारत भारती'' का मूल उद्‌श्य भारतीय जनता को उनकी वास्तविक शक्ति और सांस्कृतिक वैभव का बोध कराना था। कवि ने देशवासियों को आलस्य, निराशा और हीनभावना का त्याग कर राष्ट्रनिर्माण में सक्रिय आह्‌वान किया है।

राष्ट्रीय जागरण केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं होता, बल्कि उसमें सामाजिक सुधार, सांस्कृतिक पुनर्जारण, राष्ट्रीय एकता और जनकल्याण की भावना भी समाहित रहती है। ''भारत भारती'' इन सभी तत्वों को अपने भीतर समेटे हुए है। यही कारण है कि यह कृति हिंदी राष्ट्रीय चेतना की सबसे प्रभावशाली रचनाओं में बिनी जाती है। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्‌श्य भारत भारती के राष्ट्रीय जागरण में योगदान का अध्धयन करना तथा उसके साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व का मूल्यांकन करना है। उस अध्धयन के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि ''भारत भारती'' राष्ट्रीय चेतना के निर्माण और विकास में किस प्रकार एक प्रेरक शक्ति के रूप में कार्य करती है।

'भारत भारती' मैथिलीशरण गुप्तजी की प्रसिद्ध काव्यकृति है, जिसमें गुप्तजी ने सन् 1912 ई. से लेकर मृत्यु पर्यन्त राष्ट्रीय भावों की गंगा को जन जन के जीवन में बहाने का भगीरथ प्रयास किया है। 1912 में लिखी हुई 'भारत भारती' इसलिए और भी अधिक महत्वपूर्ण है कि भारत के इतिहास में महात्मा गांधी दक्षिण आफ्रिका से 1915 में लौटे थै, और 1913 में रवीन्द्रनाथ ठाकुर को उनकी 'गीतांजली' पर नॉबल पुरस्कार जैसा अन्तर्राष्ट्रीय महत्व का गौरव मिला। भारत के राष्ट्रीय जागरण के विकास में 'भारत–भारती' अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुई। जिस समय भारत अंग्रेजी शासन के अधीन था और स्वतंत्रता आंदोलन गति पकड रहा था, उस समय 'भारत–भारती' ने देशवासियों में राष्ट्रप्रेम, स्वाभिमान और जागृति का संचार किया। 'भारत–भारती' का ढाँचा अतीत, वर्तमान और भविष्य तीनों पक्षों पर आधारित है, जिसमें कवि ने अतीत की महिमा, वर्तमान की समस्याओं और भविष्य की संभावनाओं का चित्रण कर राष्ट्र के पुननिर्माण का मार्ग सुझाया। वर्तमान की समस्याओं पर विचार करते हुए उन्हों ने लिखा :–

''हम कौन थे, क्या हो गए है और क्या होंगे अभी

आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी।
यद्यपि हमें इतिहास अपना प्राप्त पुरा है नहीं
हम कौन थे इस ज्ञान को, फिर भी अधूरा है नहीं।''1

और नवयुवकों से उन्होंने कहा –

''हे नवयुवानो देश भर की दृष्टि तुम पर ही लगी,
हे मनुज जीवन की तुम्ही में ज्योति सबसे जगमगी।
दोगे न तुम तो कौन देगा योग देशोद्धार में ?
देखो, कहाँ क्या हो रहा है आजकल संसार में ?''2

गुप्तजी के मन में देश की बुरी हालत की चिंता बराबर घर करती रही। 'भारत–भारती' में उन्हों ने समाज की कई बुराईयों पर लिखा है। जो बाते उन्हों ने 1912 में लिखी, वे आज भी बिलकुल सही है गरीबी और अकाल के बारे में उन्हों ने लिखा

''देखो जिधर अब बस उधर ही है उदासी छा रही
काली निराशा की निशा सब ओर से है आ रही।
दारिद्रय दुर्धर अब वहाँ करता निरंतर नृत्य है
आजीविका अवलंब बहुधा मृत्यु का ही कृत्य है
कुल, जाति–पाँति न चाहिए, यह सब रहे या जाय रे
बस एक मुट्ठी अन्न हमको चाहिए अब हाय रे !
इस पेट पापी के लिए ही हम विधर्मी बन रहे
निज धर्म–मानस से निकल अध–पंक में है सन रहे।''3

विदेशी वस्तुओं के प्रति लोगों का मोह कितना है –

''विदेशी वस्तु ही क्यों, अब स्वदेशी है कहां ?
यह वेशभूषा और भाषा, सब विदेशी है यहां !
गुण मात्र छोड़ विदेशियों के हम उन्हीं में सन गए,
कैसी नकल की, वाह ! हम नक्काल पूरे बन गए !
यदि हम विदेशी माल से मुंह मोड सकते है नहीं –
तो हाय ! उसका मोह भी क्या छोड सकते है नहीं ?
क्या बंधुओ के हित तनिक भी काम कर सकते नहीं !
निज देश पर क्या अल्प भी अनुराग कर सकते नहीं ?''4

''वह आधुनिक शिक्षा किस विध प्राप्त भी कुछ कर सको –
तो लाभ क्या, बस क्लर्क बनकर पेट अपना भर सको।
लिखते रहो तो सिर झुका, सुन अफसरों की गालियाँ
तो दे सकेगी रात को दो रोटियाँ घरवालियां।''5

प्राचीन भारत के महापुरुषों को अपनी श्रध्धंजलि देते हुए मैथिलीशरण गुप्तजी वेद, उपनिषद, आर्यभट्ट, व्यास, कालिदास, भरतमुनि, विक्रमादित्य और भोज के बाद पृथ्वीराज और मध्ययुग के वीरों में अकबर, महाराणा प्रताप, शिवाजी जैसी विभूतियों को अपना सम्मान देते है।

आधुनिक काल के आदर्शो में सर सयाजीराव गायकवाड जैसे आदर्श राजा राममोहनराय, स्वामी दयानंद सरस्वती, रामकृष्ण, दिनकरराव और माधवराव जैसे नीतिज्ञ, कानून के विद्वान डाक्टर गोखले, गांधी, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी जैसी विभूतियों के नाम भी गुप्तजी ने भारत–भारती में गिना दिये थे।

'भारत–भारती' में प्राचीन भारत की झलक देते हुए भारत भूमि की आदर्श नारियों के स्मरण को गुप्तजी ने इस प्रकार संबोधित किया है –

''केवल पुरुष ही थे न वे जिनका जगत् को गर्व था,
गृहदेवियां भी थी हमारी देवियां ही सर्वथा।
था अत्रि–अनुसूया–सदृश गार्हस्थ्य दुर्लभ स्वर्ग में,
दांपत्य में वह सौख्य था जो सौक्ष्य था अपवर्ग में।
निज स्वामियों के कार्य में समभाग जो लेती न वे,
अनुरागपूर्वक योग जो उसमें सदा देती न वे,
तो फिर कहाती किस तरह 'अर्द्धांगिनी' सुकुमारियां
तात्पर्य यह अनुरुप ही थी भवरों की नारियां
विदुला, सुमित्रा, कुन्ती, सावित्री, सुकन्या, अंशुमती।''6

गांधारी, दमयंती के बारे में बताकर वे फिर कहते है –

अबला जनों का आत्म–बल संसार में वह था नया,
चाहा उन्हों ने तो अधिक क्या, रवि–उदय भी रुक गया
जिस क्षुब्ध–मुनि की दृष्टि से जलकर विहग भू पर गिरा।''7

आगे चलकर वे पुनः कहते है –

''है प्रीति और पवित्रता की मूर्ति सी वे नारियां
है गेह में वे शक्ति–रुपा, देह में सुकुमारियां
गृहिणी तथा मंत्री स्वपति की शिक्षिता है वे सती
ऐसी नहीं है वे कि जैसी आजकल की श्रीमति।''8

आधुनिक काल की स्त्रियों की दुर्दशा पर वे वर्तमान खंड़ में लिखते है –

''पाले हुए पशु पक्षियों का ध्यान तो रखते सभी
पर नारियों की दुर्दशा क्या देखते है हम कभी ?
हमने स्वयं पशु–वृति का साधन बना डाला उन्हें,
संतान जनने मात्र को बस्त्रान्न दे, पाला उन्हें।''9

नारियों के प्रति ऐसा उदार भाव उनके अन्य काव्यों में भी दर्शित होता है। वे परिवार को केन्द्र में रखकर भारतीय समाज को देखना चाहते है। नारी माता, प्रेमिका, बहन, स्वामिनी, दासी, विरांगना,

परित्यकता, विरहिणी आदि अनेक रुपो में उनके खंडकाव्यों में चित्रित है।

'भारत–भारती' के भविष्यवत् खंड में नए युग का स्वागत करते हुए गुप्तजी ने लिखा है –

''हमको समय को देखकर ही नित्य चलना चाहिए,
बदले हवा जब जिस तरह हमको बदलना चाहिए।
विपरित विश्व प्रवाह के निज नाव जा सकती नहीं,
अब पूर्व की बाते सभी प्रस्ताव पा सकती नहीं।
व्यवसाय अपने व्यर्थ है अब भव्य यंत्रो के बिना,
परतंत्र है हम सब कही अबा भव्य यंत्रो के बिना।
कल के हलों के सामने अब पूर्व का हल व्यर्थ है,
उस बाष्प विद्युद्वेग–सन्मुख देह का बल व्यर्थ है।''10

विज्ञान के प्रति प्रेम, रुढ़ियों का विरोध, अपने से भिन्न धर्म को समझने का प्रयत्न करना, उन्हें आदर देना, गुप्तजी की कविता का मुख्य विषय रहा है।

भारत हमारा देश है, वह हमारी जन्म भूमि है, उस पर हमारा स्वत्व है। हमारी जन्मभूमि पर विदेशी आकर शासन करें, अपने घर में ही हम बन्दी बनें रहे यह घोर लज्जा की बात है। इस लोह श्रृंखला को प्राणों की बलि देकर भी छिन्न–भिन्न करना होगा – भारत की आत्मा गुप्तजी के स्वर में चित्कार कर उठी –

''भारत लक्ष्मी पडी राक्षसों के बन्धन में।
सिन्धु पार वह विलख रही है व्याकुल मन में।''11

'भारत–भारती' में अतीत प्रेम और सुधारावादी दृष्टि के साथ हिन्दू–राष्ट्रवादी की काव्य–चेतना की अभिव्यक्ति हुई है। इसके साथ–साथ कविने देशवासियों को पराधिनता की बेडियों से मुक्त होने के लिए सचेत एवं सावधान किया और विदेशी सत्ता को उखाड़ फेंकने का आग्रह किया, जैसे –

''शासन किसी पर जाति का चाहे विवेक विशिष्ट हो
संभव नहीं है किन्तु जो सर्वांश में वह इष्ट हो।''12

खडीबोली और केवल खडीबोली में कविता लिखकर निर्भीकतापूर्वक किन्तु अत्यंत नम्रता से खडे रहने वाले गुप्तजी थे। जिस समय ''भारत–भारती'' निकली उस समय राजनैतिक और सामाजिक विचारधारा में तूफान आया। सुधार आंदोलन, खिलाफत आंदोलन, सत्याग्रह आंदोलन, आतंकवादी आंदोलन, अन्य हिंसक क्रान्ति के आंदोलन, 42 की क्रान्ति, आजाद हिन्द फौज संबंधी आंदोलन, बंगाल के अकाल का जनख सभी ने देश की जनता के भिन्न–भिन्न वर्गो और स्तरों को प्रभावित किया। लक्ष–लक्ष अबालवृद्ध नर–नारी अपने प्राणों को हथेली पर रखकर स्वातंत्र्य संग्राम में जुझ गए। 'भारत–भारती' का सामाजिक महत्व अपरिमेय था। सभा मंचो पर वक्ता 'भारत–भारती' के छंदो का इतना उपयोग करते मानों उनके कहने की सामग्री तथा शीर्षक और प्राण केवल भारत–भारती में ही है। उन दिनों शायद ही कोई समाचारपत्र हो जिसमें गुप्तजी और उनकी कविता 'भारत–भारती' की प्रशंसा न की हो।

धर्म के नाम पर समाज में चलनेवाले ढोंग, अनाचार, आपस में जातिभेद और शैव–वैष्णव आदि असंख्य भेदभावों की वे निंदा करते है। हिन्दू समाज में कुरीतियों में बेजोड विवाद, अंध–परंपरा, वर कन्या विक्रय, धनोपार्जन के लिए मिलावट, नशेबाजी, आत्मविस्मृति, गृहकलह सब पर उन्होंने प्रकाश डाला है।

संदर्भ सूचि :

1. गुप्त मैथिलीशरण, भारत भारती, पृष्ठ 14, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. गुप्त मैथिलीशरण, भारत भारती, पृष्ठ 182, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. गुप्त मैथिलीशरण, भारत भारती, पृष्ठ 97, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. गुप्त मैथिलीशरण, भारत भारती, पृष्ठ 113, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. गुप्त मैथिलीशरण, भारत भारती, पृष्ठ 127, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. गुप्त मैथिलीशरण, भारत भारती, पृष्ठ 21, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
7. गुप्त मैथिलीशरण, भारत भारती, पृष्ठ 24, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
8. गुप्त मैथिलीशरण, भारत भारती, पृष्ठ 69, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
9. गुप्त मैथिलीशरण, भारत भारती, पृष्ठ 148, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
10. गुप्त मैथिलीशरण, भारत भारती, पृष्ठ 170, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
11. गुप्त मैथिलीशरण, साकेत, द्वादश सर्ग पृष्ठ 302, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
12. गुप्त मैथिलीशरण, भारत भारती, पृष्ठ 91, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।